REVIEW OF RESEARCH

मुस्लिम स्त्रियों में कार्यशीलता एवं पारिवारिक सहयोग

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

डॉ. बालक राम राजवंशी

सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय,
(बी0जी0आर0) परिसर पौड़ी, उत्तराखण्ड.

सारांश

प्रत्येक राष्ट्र की समृद्धि का आँकलन उसके नागरिकों की शिक्षा, स्वास्थ्य, आयु एवं आय से किया जाता है। 'शिक्षा और समाज' दोनों अविछिन्न रूप से परस्पर गुँथे हुए हैं। शिक्षा समाज में ही फलती–फूलती है और समाज भी शिक्षा की छत्रछाया में अपने को अधिक प्राणवान, गतिशील, सजग एवं सुसंस्कृत बनाता है। एक की प्रगति पर दूसरे की प्रगति निर्भर है एवं एक की अवनति बहुत अंशों तक दूसरे के विनाश का कारण भी बन जाती है। किसी भी समाज में प्रचलित शिक्षा की प्रणाली उस समाज को प्रभावित करती है एवं उस समाज से प्रभावित भी होती है। शिक्षा समाज के हस्त में एक ऐसा अद्वितीय उपकरण है, जिसके द्वारा वह उन परम्पराओं पर नियंत्रणों एवं साँस्कृतिक तत्वों को सुरक्षित रखता है जो उसके मानव के लम्बे एवं सतत् प्रयत्नों के फलस्वरूप संग्रहित किये हैं। शिक्षा का मनुष्य के जीवन मे महत्वपूर्ण स्थान है। जिस समाज व देश में स्त्री की स्थिति जितनी महत्वपूर्ण, सुदृढ़ सम्मान जनक व सक्रिय होगी, उतना ही वह समाज उन्नत, समृद्ध व मजबूत कहलाएगा। इस बात को आधुनिक विचारक व चिंतक तो स्वीकार करते ही हैं, हमारे धर्मग्रन्थों में भी इसकी पुष्टि होती है। धर्म ग्रन्थों से यहाँ तक ज्ञात होता है कि हमारे देश में मातृ–सत्ता अस्तित्व में थी जहाँ रज़िया सुल्ताना जैसी स्त्रियों नें अपनी सल्तनत चलाकर अपनी राजनीतिक क्षमता का परिचय दिया। वर्तमान में भी जहाँ नूरजहाँ को मुगल काल की सबसे सशक्त व प्रभावशाली मलिका इतिहासकार बताते हैं। विपरीत परिस्थितियों में उन्होंने जो संघर्ष किये, वे स्मरणीय व अनुकरणीय हैं।

प्रस्तावना

भारत में लगभग 70 वर्षों में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा शैक्षणिक परिवर्तन हुए हैं। जिसके परिणाम स्वरूप ही अधिक से अधिक संख्या में स्त्रियाँ चाहे वे हिन्दू हों मुस्लिम या क्रिश्चियन हों, अब पर्दे के घूँघट की ओट से छिपी स्त्रियों का संसार घर की चारदीवारी तथा उसमें सिमटे उनके कार्यों के बाहर आ चुका है। आज की स्त्री का व्यक्तित्व कमजोर स्त्रियों का व्यक्तित्व नहीं, बल्कि आत्मविश्वास से भरे दमकते चेहरे वाली आधुनिक स्त्री का हो गया है। आधुनिक स्त्रियाँ अब घरेलू मात्र न होकर पति के समानान्तर प्रतिनिधि हो गयी हैं तथा उन्होंने स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने की ओर अपने कदम बढ़ा दिये हैं। शिक्षित विवाहित स्त्रियों को घर एवं बाहर दोनों जगहों पर सामन्जस्य स्थापित करना पड़ता है। विवाहित एवं कार्यशील मुस्लिम स्त्रियों की दोहरी भूमिका होती है। एक साथ वे कर्मचारी एवं ग्रहणी होती हैं। इन दोनों भूमिकाओं के मध्य संघर्ष की भूमिका उत्पन्न होने लगती है। यदि वे घरेलू भूमिका भलीभाँति निर्वाह करती हैं तो वाह्य भूमिका को ठेस पहुँचने लगती हैं। यदि वे वाह्य भूमिका में अत्यधिक रुचि लें तो घरेलू भूमिका धूमिल पड़ने लगेगी। इस प्रकार मुस्लिम स्त्रियों के जीवन में अत्यन्त कोमल संतुलन की समस्या है। यदि परिवार के सदस्य उनकी दोनों भूमिकाओं को समर्थन न दें तो वह परिवार और कार्यक्षेत्र

में भली भाँति समायोजन नहीं कर सकती हैं। मुस्लिम स्त्रियों के परिवारों के सदस्यों की भूमिकाओं को अनके दायित्वों व कर्तव्यों की दृष्टि से अभी तक पुनः परिभाषित नहीं किया गया है। इसलिए उनके परिवार में संघर्ष की अधिक सम्भावनाएँ जन्म लेती दिखाई दे रही हैं। वर्तमान में स्थिति यह है कि यदि मुस्लिम स्त्रियाँ बदलती परिस्थिति से स्वयं को समायोजन लायक बनाएँ तो उनके लिये सामंजस्य की समस्या अधिक चौंका देने वाली बन सकती है। यदि एक व्यक्ति प्रौढ़ावस्था में किसी काम की नई भूमिका निभाने का अभ्यस्त न हो तो निश्चय ही उसके समकक्ष वर्तमान में भूमिका समायोजन का प्रश्न खड़ा हो सकता है, क्योंकि सभी समुदायों में पुरुषों की तुलना में स्त्री के कार्यों को कम सम्मान मिलता है। अतः स्त्रियों का पुरुषों के कामधन्धों को अपनाना, उनकी नौकरी वाली प्रतिष्ठा के उच्चतर स्तर की ओर बढ़ना है।

मुख्य शब्द : कार्यशीलता, व्यवसाय, पारिवारिक सहयोग।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं–

1. मुस्लिम स्त्रियों में पारिवारिक निर्णय एवं भूमिका संरचना तथा सामन्जस्य की स्थिति का अध्ययन करना।
2. मुस्लिम स्त्रियों में कार्यशीलता का अध्ययन करना।
3. मुस्लिम स्त्रियों में नौकरी की आवश्यकताओं का अध्ययन करना।
4. उनमें आधुनिक जीवन–शैली के प्रति बढ़ती हुई रूचि का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. धार्मिक व सामाजिक दबाव के फलस्वरूप मुस्लिम स्त्रियों में कार्यशीलता के प्रति एवं आधुनिक जीवन–शैली अपनाने की ओर रूझान बढ़ रहा है।
2. मुस्लिम स्त्रियों में पारिवारिक सहयोग की स्थिति सहयोत्मक है।

अध्ययन की परिसीमाएँ :

शोधार्थी द्वारा उपलब्ध समय एवं संसाधनों को दृष्टिगत रखते हुये अनुसन्धान के विशेष क्षेत्र को सीमित करना होता है। प्रस्तुत शोध निम्नांकित परिसीमाओं के अन्तर्गत पूर्ण किया गया है।

1. प्रस्तुत शोध कार्य केवल शिक्षित एवं कार्यशील मुस्लिम स्त्रियों की शिक्षा एवं उनकी सामाजिक गतिशीलता पर किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध लखनऊ महानगर के नगर निगम के वार्ड वजीरगंज में निवास करने वाली तथा लखनऊ नगर में स्थित कार्यालयों में कार्यशील मुस्लिम स्त्रियों पर ही आधारित है।
3. प्रस्तुत शोध केवल उत्तर प्रदेश तक ही सीमित है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में समस्या की प्रकृति को दृष्टि में रखते हुये वर्णात्मक शोध प्ररचना एवं सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

जनसंख्या एवं न्यायदर्श : प्रस्तुत अध्ययन में कार्यशील मुस्लिम स्त्रियों को शोध की जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है, जिनकी आयु 18–60 वर्ष के मध्य है। इस अध्ययन हेतु उत्तरदाताओं का चयन टारो यामने(1970) के द्वारा दिये गये निम्नलिखित गणितीय सूत्र द्वारा किया गया है–

$$\text{Sample Size}(n) = \frac{n}{1+Ne^2}$$

Where, n= Total Number of Universe

E = error (0.05)

गणितीय सूत्र का प्रयोग करने पर

$$\text{Sample Size} = \frac{2890}{1+2890(0.05)^2} = \frac{2890}{9.15} = 315.84$$

अतः निदर्शन का आकार 315.84 के स्थान पर अध्ययन हेतु 300 इकाईयों को चयनित किया गया है।

प्रस्तुत शोध के उपकरण : आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए स्वयं द्वारा संरचित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है जिसमें बहुविकल्पी प्रकार के प्रश्नों को रखा गया तथा प्राप्त तथ्यों को सारणी के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

परिणाम एवं विवेचना

प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया कि मुस्लिम स्त्रियाँ परिवार एवं कार्यालयों में दोहरी भूमिकाओं का निर्वाह करते हुये सामन्जस्य स्थापित करने की कोशिश करती हैं।

व्यक्तियों में सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से अनेक प्रकार की भिन्नताएँ पायी जाती हैं कार्ल मैनहीम(1954)[1] ने इस सन्दर्भ में कहा है कि ''किसी व्यक्ति के मतों, वक्तव्यों और विचारों का मूल्यांकन उसके चेहरे से नहीं किया जा सकता है, वरन् उनका विश्लेषण उसके जीवन की परिस्थितियों के प्रकाश में ही किया जा सकता है।'' आयु, लिंग, धर्म एवं जाति, शिक्षा, व्यवसाय एवं आय में पायी जाने वाली विभिन्नता व्यक्ति की सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं उसके दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करती है। इसलिए उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। व्यक्ति के जीवन में सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि परिस्थितियाँ व्यक्ति के जीवन में भूमिकाओं को ग्रहण करने में सहभागिता एवं मनोवृत्तियों के विकास क्रम में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। और जहाँ तक परिथितियों के परिवर्तन एवं गतिशीलता का प्रश्न है, तो इस सन्दर्भ में अनेक समाज वैज्ञानिकों नें अपने अध्ययन द्वारा प्रदर्शित किया है कि सामाजिक पृष्ठभूमि और समाजिक गतिशीलता में परिवर्तन का मानवीय वयवहार से अत्यन्त धनिष्ठ सम्बन्ध है। अतः सन्दर्भवश कहा जा सकता है कि सामाजिक परिस्थिति मुस्लिम स्त्रियों की कुशलता एवं उनके स्तर को प्रभावित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं। प्राचीन समाज में मुस्लिम स्त्रियों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, क्योंकि मुस्लिम समाज में स्त्रियों को घर की चार दीवारी से बाहर निकलने के बहुत कम अधिकार प्राप्त थे। जबकि वर्तमान सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में मुस्लिम स्त्रियों को एक व्यवसायिक व्यक्ति के रूप में भी जाना जाने लगा है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि समाज में परिवर्तन एवं वैश्वीकरण की प्रक्रिया के तीव्र होने के साथ–साथ मुस्लिम स्त्रियों की प्रस्थिति एवं शिक्षा में भी परिवर्तन आता जा रहा है। वर्तमान की बदलती हुई सामाजिक–आर्थिक तथा राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में तथाकथित सम्मान का विचार अर्थहीन हो गया है। वैश्वीकरण के इस युग में मुस्लिम समाज में अविवाहित एवं विवाहित द्वारा शिक्षा को प्राप्त करके नौकरी करने को भी प्रायः अपमानजनक नहीं माना जा रहा है, बल्कि उसे सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

1. मुस्लिम स्त्रियों की आयु

आयु एक महत्वपूर्ण जैविकीय धारणा है जिसके द्वारा व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन के आयाम पर विभिन्न चरणों अथवा अवस्थाओं में विभक्त किया जाता है। जैविकीय दृष्टि से आयु मानव के शारीरिक विकास एवं परिपक्वता की प्रक्रिया प्रदर्शित करती है। आदिम समाज से लेकर आधुनिक जटिल समाज तक आयु व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति और भूमिका का एक प्रमुख अंग रही है अर्थात् व्यक्ति की प्रस्थिति निर्धारण में आयु का विशिष्ट महत्व है। वर्तमान में जहाँ अर्जित गुणों को प्राथमिकता प्रदान की जाती है, वहीं आर्थिक व्यवसाय तथा पद की प्राप्ति के लिये भी आयु का विशेष महत्व है। समाज में स्त्रियों का स्तर आयु के आधार पर भिन्न–भिन्न

होता है। उन्हें आयु के आधार पर ही उनके कार्यों का निर्धारण किया जाता है। जहाँ युवा और वृद्ध स्त्रियों को प्रत्येक कार्य का अनुभव भी अधिक होता है। क्योंकि विभिन्न उम्र की स्त्रियों में उनकी मानसिक तथा व्यवहार के ढंग एवं तरीके बिल्कुल अलग–अलग प्रकार के होते हैं। स्त्रियों के समक्ष आयु का अधिक महत्व होता है, क्योंकि इसी के द्वारा वह किसी कार्य को पूर्ण कर पाने में सक्षम होती हैं। उपरोक्त सन्दर्भ में एकत्रित किये गये तथ्यों का विश्लेषण निम्न सारणी में प्रस्तुत किया गया है –

सारणी संख्या (1) : मुस्लिम स्त्रियों की आयु वर्ग की स्थिति का वर्गीकरण

आयुवर्ग	संख्या	प्रतिशत
20 – 25	36	12
25 – 30	45	15
30 – 35	66	22
35 – 40	75	25
40 – 45	54	18
45 – 50	24	08
50 – 55	–	–
कुल योग	**300**	**100**

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 35–40 आयु वर्ग के अन्तर्गत आने वाली मुस्लिम–स्त्रियों का प्रतिशत 25 पाया गया। 30 – 35 वर्ष की आयु में स्त्रियों की संख्या का 22 प्रतिशत रहा, 40–45 वर्ष की आयु का 18 प्रतिशत, 25–30 वर्ष की आयु का 15 प्रतिशत, 20–25 वर्ष की आयु का 12 प्रतिशत व 45 – 50 वर्ष की आयु का 08 प्रतिशत पाया गया तथा सर्वेक्षण के समय 50–55 वर्ष की स्त्रियों का प्रतिशत नगण्य पाया गया । इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों से यह ज्ञात हुआ है कि आधुनिक काल (वर्तमान समय) में मुस्लिम स्त्रियां कम आयु से ही किसी आर्थिक व सामाजिक कठिनाइयों में फँस जाती हैं। जिसके कारण उनको अपने परिवार तथा समाज में स्थान प्राप्त करने के लिये अधिक प्रयत्न करना पड़ता है।

2. शैक्षिक योग्यता

व्यवसायिक कुशलता प्राप्त करने के लिये उच्च शिक्षा का ज्ञान होना बहुत ही आवश्यक है सभ्य समाज का निर्माण श्रेष्ठ शिक्षा पर निर्भर है। साथ ही हमारे संविधान में प्रतिष्ठित समाजवाद, धर्मनिपेक्षता और लोकतन्त्र के लक्ष्यों की प्राप्ति में हमारी सहायता करती है। शिक्षा के द्वारा ही हम मानवता को सुसंस्कृत बनाने का प्रयास करते हैं। अतः मुस्लिम स्त्रियों में शिक्षा का होना आवश्यक है। वह इसलिये जिससे वह अपने कार्य में उन्नति कर सकें।

सारणी संख्या (2) : शैक्षिक योग्यता की स्थिति का वर्गीकरण

शिक्षा का स्तर	संख्या	प्रतिशत
आठवीं	30	10
हाईस्कूल	54	18
इण्टरमीडिएट	72	24
स्नातक	84	28
स्नातकोत्तर	36	12
अन्य शिक्षा	24	08
कुल योग	**300**	**100**

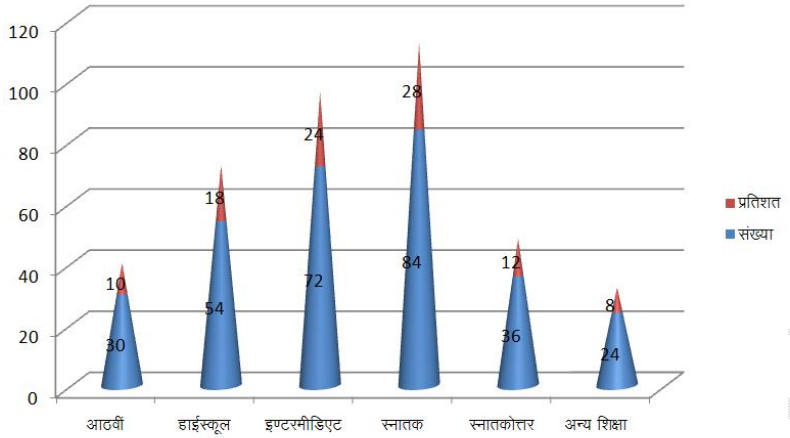

सारणी संख्या–2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 28 प्रतिशत उत्तरदाता (मुस्लिम स्त्रियाँ) स्नातक स्तर की शिक्षा, 12 प्रतिशत स्नातकोत्तर है, 24 प्रतिशत इण्टरमीडिएट, 18 प्रतिशत हाईस्कूल तथा 8 प्रतिशत अन्य जैसे पी0एच0डी0, एम0एड0, बी0एड0, बी0टी0सी0 और नर्सिंग की शिक्षा से परिपूर्ण पायी गयी। सर्वेक्षण के समय 10 प्रतिशत उत्तरदाता आठवीं तक शिक्षिति पायी गयीं हैं। अतः उपरोक्त विवरण से ज्ञात होता है कि मुस्लिम स्त्रियों का रुझान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा एवं सामाजिक गतिशीलता की ओर बढ़ रहा है। आधुनिक जटिल समाज में अधिकतर मुस्लिम स्त्रियाँ सामाजिक–आर्थिक व धार्मिक कठिनाइयों में फँस जाती है जिसके कारण वे शैक्षिक योग्यता को बढ़ाने में असमर्थ रहती है। परन्तु वर्तमान में मुस्लिम स्त्रियों में शैक्षिक योग्यता एवं व्यवसायिक उद्यमिता पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है।

3 वैवाहिक स्थिति

वैवाहिक प्रस्थिति व्यक्ति के कार्य को प्रभावित करती हैं विवाह व्यक्ति को अपने परिवार के प्रति कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों में वृद्धि करता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति शीघ्र ही कोई न कोई व्यवसाय अथवा नौकरी पाने का प्रयत्न करता है ताकि वह अपने ऊपर आश्रित परिजनों का भरण–पोषण कर सके तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन भी कर सके।

प्रमिला कपूर (1970:72) के अध्ययन का निष्कर्ष है कि पत्नी का कामगार होना उनके वैवाहिक जीवन का अपना एक समन्वय है। स्त्री के कामगार होने से उनके वैवाहिक जीवन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है, अपितु यह तो एक वैज्ञानिक जीवन समन्वय है जो कि रोजगार पूर्व एक प्रतिकूल वातावरण बनाता है।

सारणी संख्या (3) : वैवाहिक स्थिति का वर्गीकरण

विवाह का स्वरूप	संख्या	प्रतिशत
अविवाहित	66	22
विवाहित	123	41
विधवा	51	17
पुनर्विवाहित	36	12
तलाकशुदा	24	08
कुल योग	**300**	**100**

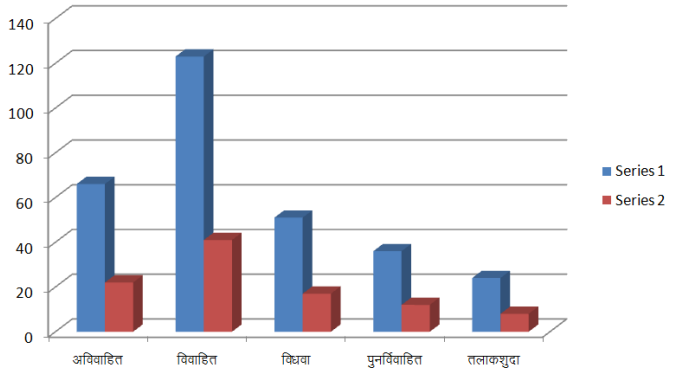

उपरोक्त सारणी संख्या 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 41 प्रतिशत विवाहित, 22 प्रतिशत अविवाहित, 17 प्रतिशत विधवा, 12 प्रतिशत पुनर्विवाहित तथा 8 प्रतिशत तलाकशुदा मुस्लिम स्त्रियाँ विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवायें प्रदान कर रहीं हैं। शोध के तथ्यों से ज्ञात होता है कि वैवाहिक स्थिति भी स्त्रियों को शिक्षित एंव कार्य करने को प्रभावित करती है, क्योंकि विवाह परिवार के प्रति कर्तव्य एवं उत्तरदायित्वों में वृद्धि करता है। जो स्त्रियाँ अविवाहित थीं उन्होंने शिक्षा प्राप्त करने के लिये विवाह नहीं किया और वे अपनी शिक्षा के साथ साथ परिवारजनों के कार्यों में हाथ बटा रहीं है। तथा वे समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर रही हैं। विधवा तथा तलाकशुदा स्त्रियों से यह पूंछे जाने पर कि उन्हें शिक्षा प्राप्त कर रोजगार एवं आत्मनिर्भर होना कैसा लगता है, तो अधिकतर उत्तरदाताओं का मत था कि इस वैश्विक समय में एक स्त्री का शिक्षित एवं आत्मनिर्भर होना अत्यन्त आवश्यक है।

4. मुस्लिम स्त्रियों का कार्य क्षेत्र

वर्तमान युग की परिस्थितियों में पुनः परिवर्तन होना प्रारम्भ होना प्रारम्भ हो गया है स्त्री पुनः सार्वजनिक जीवन में प्रवेश कर रही है। वर्तमान समय में आर्थिक दबाव के कारण परिवार का सफल संचालन मात्र पुरुष की आय से सम्भव नहीं है। ऐसी स्थिति में मध्यमवर्ग की स्त्रियाँ विभिन्न रोज़गार के क्षेत्रों में सक्रिय हो रही है। स्त्री रोज़गार का प्रश्न अत्यन्त विवादास्पद रहा है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहस का विषय रहा है। आई0एल0ओ0(1964) के सम्मेलन में माना गया है कि विकासशील राष्ट्रों द्वारा स्त्री रोज़गार को बढ़ावा देने की नीति दोषपूर्ण है। विशेषकर ऐसी स्त्रियों को घरेलू दायित्व का भी निर्वाह करती हैं। यद्यपि कुछ सदस्यों ने राष्ट्र के विकास स्त्री–पुरुष की समान भागीदारी का समर्थन किया है। (ऊषा तलवार :1984, 82–83)।

वैश्वीकरण के युग में जब मानव की आवश्यकताओं एवं सुविधाओं में अपार वृद्धि हुई है, विभिन्न सुविधाओं की प्राप्ति हेतु आर्थिक साधनों की माँग भी अधिक होने लगी है, ऐसी स्थिति में समाज के समस्त वर्गों द्वारा रोज़गार की माँग की जाने लगी है। मुस्लिम स्त्रियों के कार्य क्षेत्रों का विवरण निम्न सारणी में प्रस्तुत किया गया है–

सारणी संख्या (4) : उत्तरदाताओं के कार्यक्षेत्रों का वर्गीकरण

संस्थाओं का विवरण	संख्या	प्रतिशत
शिक्षण संस्थाएँ	135	45
कम्प्यूटर संस्थाएँ	21	07
बैंक	27	09
पुलिस प्रशासन विभाग	15	05
रेल/परिवहन विभाग	36	12
चिकित्सा विभाग	30	10
नगर निगम	24	08
निजी कार्य	15	04
कुल योग	300	100

उपरोक्त सारणी संख्या 4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अधिकतर 45 प्रतिशत स्त्री उत्तरदाता शिक्षण संस्थाओं में, 12 प्रतिशत रेल–परिवहन, 10 प्रतिशत चिकित्सा विभाग में, 09 प्रतिशत बैंक, 08 प्रतिशत नगर निगम में, 07 प्रतिशत कम्प्यूटर संस्थाओं में, 05 प्रतिशत पुलिस/प्रशासन विभाग में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रही हैं। अध्ययन सर्वेक्षण के समय 04 प्रतिशत मुस्लिम स्त्रियाँ अपने निजी कार्य जैसे सिलाई, कढ़ाई करना, लिफाफे बनाना इत्यादि कार्यों में लगी हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि अधिकतर मुस्लिम स्त्रियों का शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत होना इस बात का प्रतीक है कि शिक्षा के द्वारा ही समाज की अधिकतर बुराईयों को दूर किया जा सकता है। इसलिये उन्होंने कार्य करने के लिये शिक्षण संस्थाओं का चयन किया है।

5. व्यवसाय का स्वरूप

किसी व्यवसाय को प्रारम्भ करने के लिए सर्वप्रथम संस्था एवं स्थान का चुनाव किया जाता है। वह चाहे सरकारी नौकरी करने का हो या गैर सरकारी। इसमें से एक को चुनना आवश्यक है। इस सम्बन्ध में एकत्रित किये गये तथ्यों को निम्न सारणी में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी संख्या (5) : व्यवसाय के स्वरूप का वर्गीकरण

व्यवसाय (नौकरी) का स्वरूप	संख्या	प्रतिशत
सरकारी	96	32
अर्द्धसरकारी	75	25
गैर सरकारी	99	33
निजी कार्य	30	10
कुल योग	**300**	**100**

उपरोक्त सारणी संख्या–5 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 33 प्रतिशत उत्तरदाता ग़ैर सरकारी, 32 प्रतिशत सरकारी, 25 प्रतिशत अर्द्धसरकारी तथा मात्र 10 प्रतिशत अपने निजी कार्यों में सम्मिलित पाई गयी।

उपरोक्त सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष निकलता है कि मुस्लिम स्त्रियों का व्यवसाय में प्रतिशत गैर सरकारी नौकरी में अधिक रहा है। जबकि सरकारी नौकरी में उत्तरदाताओं का प्रतिशत निम्न है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मुस्लिम स्त्रियाँ शिक्षा प्राप्त करनें के पश्चात् नौकरी करके आत्मनिर्भर बनने की चाह नें सरकारी नौकरियों की तुलना में गैर सरकारी नौकरियों की ओर आकर्षित किया है।

6. वेतनक्रम की स्थिति

आजकल स्त्री एवं पुरुष सभी की अपनी–अपनी आावश्यकताएँ एवं आकाँक्षायें होती हैं तथा वे अपनी इन आकांक्षाओं की पूर्ति तभी कर सकते हैं जब उनका वेतन उपयुक्त हो। मुस्लिम स्त्रियाँ भी अपने परिश्रम के हिसाब से ही अपनी आय चाहती हैं, क्योंकि आजकल बहुत से संस्थान ऐसे भी हैं जहाँ स्त्रियों को पर्याप्त शिक्षा प्राप्त होने के बाद भी उन्हें तुलनात्मक रूप में वेतन कम मिलता है।

सारणी संख्या (6) : वेतनक्रम की स्थिति का वर्गीकरण

वेतन	संख्या	प्रतिशत
5000–10000	60	20
10000–15000	45	15
15000–20000	75	25
20000–25000	42	14
25000–30000	63	21
30000 से अधिक	15	05
कुल योग	**300**	**100**

उपरोक्त सारणी संख्या–6 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं की आय का मुख्य स्रोत उनका स्वयं एवं परिवार का वेतन है। इसी को आधार मानकर इनके सामाजिक स्तर का निर्धारण आर्थिक सुविधाओं के साथ–साथ किया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक आय प्राप्त करने वाली मुस्लिम स्त्रियों का 25 प्रतिशत 15000–20000 वेतन वाला समूह है, 21 प्रतिशत 25000–30000 में 20 प्रतिशत 10000 से कम में, 15 प्रतिशत 10000–15000 में, मात्र 05 प्रतिशत उत्तरदाता 30000 से अधिक वेतन प्राप्त कर रही है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मुस्लिम स्त्रियाँ अपनी निर्धनता तथा रोजगार के अवसरों की कमी या अन्य कारणों से यह स्त्रियाँ कम वेतन पर कार्य करने को सहमत हो जाती हैं। इसमें दोनों ही लाभ हैं, एक तो घर से बाहर निकलकर अपने समाज में वे स्थान प्राप्त कर रहीं हैं वहीं दूसरी ओर आत्मनिर्भर बनें रहने की भावना भी उनमें बढ़ रही है।

7. रोजगार के चयन में सलाह की आवश्यकता

हमारे देश में स्त्रियों को सशक्त व सबल बनाने के लिये किये जा रहे प्रयास नये नहीं हैं। इन प्रयासों का प्रभाव भी नारी समाज में परिलक्षित हुआ है। वर्तमान में मुस्लिम स्त्रियों नें अपनी असरदार भूमिका निभाकर न सिर्फ पुरुषों के वर्चस्व को तोड़ा है, बल्कि पुरुष प्रधान समाज का भी ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। निःसंदेह समाज में स्त्री द्वारा पुरुष का साथ रहा है।

आधुनिक स्त्रियाँ अब घरेलू मात्र न होकर पति के समानान्तर आकर खड़ी हो गयी हैं। आज उन्होंने स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने की ओर कदम बढ़ा दिये हैं। आज की नारी प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों से कंधा मिलाकर चलने को तैयार रहती है। यह क्षेत्र चाहे धार्मिक हो, सामाजिक हो, आर्थिक हो या फिर राजनैतिक। प्रश्न यह उठता है कि स्त्रियों को इस गतिशीलता की प्रेरणा उन्हें किसने दी या वे स्वयं ही इस ओर अग्रसर हुई हैं। इस सन्दर्भ में एकत्रित किये गये तथ्यों को निम्न सारणी में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी संख्या (7) : रोजगार के चयन में सलाह की आवश्यकता

रोजगार का चयन	संख्या	प्रतिशत
स्वयं	195	65
माता–पिता द्वारा	42	14
सास–श्वसुर द्वारा	18	6
पति के द्वारा	30	10
मित्रों के द्वारा	15	05
कुल योग	300	100

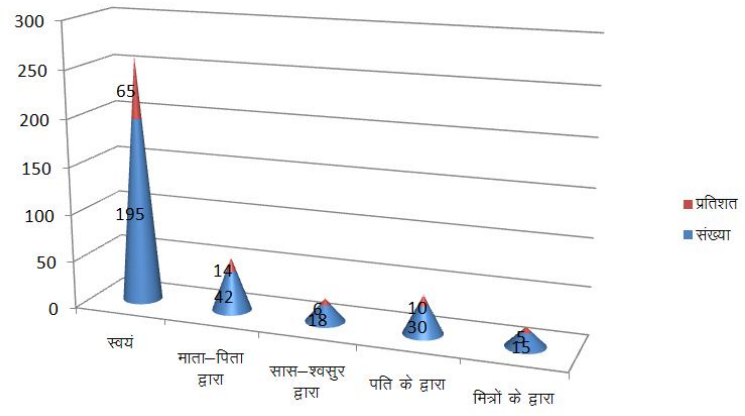

उपरोक्त सारणी संख्या–7 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 65 प्रतिशत स्त्रियाँ ऐसी पायी गयी जिन्होंने स्वयं ही गतिशीलता के मार्ग को चुना है। 14 प्रतिशत उत्तरदाताओं नें रोजगार चयन माता–पिता की सलाह से स्वीकार किया। 10 प्रतिशन नें पति के द्वारा और 06 प्रतिशत नें सास–ससुर से सलाह के पश्चात्, तथा मात्र 05 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने मित्रों की सहायता से कार्य करने की प्रेरणा ली।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश मुस्लिम स्त्रियाँ ऐसी हैं जिन्हें कार्य करने की प्रेरणा स्वयं से मिली प्रत्येक व्यक्ति की यही इच्छा होती है कि वह अपनी सभी प्रकार की आवश्यकताओं का पूर्ण करे। इसके लिये उसको कार्य करना आवश्यक हो जाता है और इन आवश्यकताओं की पूर्ति तभी सम्भव है जब वह अर्थिक रूप से सुदृढ़ हो।

8. मुस्लिम स्त्रियों के लिये नौकरी की आवश्यकता

वर्तमान समय तीव्र गति से परिवर्तन की ओर अग्रसर है। तेज रफ्तार से भागती जिन्दगी में स्त्री जीवन के कई मानदण्डों में परिवर्तन आया है। आज की स्त्री का व्यक्तित्व कमजोर स्त्रियों का व्यक्तित्व नहीं; बल्कि आत्मविश्वास से भरे दमकते चेहरे वाली अधुनिक स्त्री का हो गया है। आज समाज की तकनीकी विकास से नहीं बल्कि संचार क्रान्ति के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में स्त्रियाँ अपने परिवार का स्तर ऊँचा उठाने तथा अधिक धन व साधन जुटाने के लिये प्रयत्नशील हैं।

सिल्लेरॉट (1971) नें कहा है कि शहरी शिक्षित एवं कार्यशील स्त्रियों की वस्तुस्थिति के बारे में भ्रम पड़ सकता है और स्वतः अनुमान लगाने की भूल कर सकता है कि स्थिति में काफी बदलाव आ चुका है। बार–बार हॉट नें अपने अध्ययन में कहा है कि भारत में कार्यशील स्त्रियाँ मुख्यतः या तो बिल्कुल गरीब तबके की होती हैं या फिर बहुत धनी वर्ग से जुड़ी होती हैं। उन्होंने गरीब स्त्रियाँ तो अपने न्यूनतम आर्थिक आवश्यकताओं के लिये श्रम करती हैं, जबकि धनी स्त्रियाँ अपनी बौद्धिक भूख एवं सन्तुष्टि के लिये कामकाज करती हैं।

इस सन्दर्भ में यह जानने का प्रयास किया गया है कि तमाम सामाजिक व धार्मिक दबाव के बावजूद भी मुस्लिम स्त्रियों में नौकरी करने की चाहत क्यों बढ़ रही है? एकत्रित किये गये तथ्यों को सारणी संख्या 3.14 में प्रदर्शित किया गया है–

सारणी संख्या (8) मुस्लिम स्त्रियों के लिये नौकरी की आवश्कता

नौकरी की आवश्यकता	संख्या	प्रतिशत
प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये	120	40
आर्थिक स्थिति उच्च करने के लिये	150	50
समय व्यतीत करने के लिये	30	10
कुल योग	300	100

उपरोक्त सारणी संख्या–8 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 50 प्रतिशत मुस्लिम स्त्रियाँ अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिये नौकरी की आवश्यकता को आवश्यक मानती हैं। 40 प्रतिशत स्त्रियाँ ऐसी भी थीं जिन्होंने समाज में नारी उत्थान व प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये सेवा क्षेत्रों में कदम रखा। मात्र 10 प्रतिशत स्त्रियाँ ऐसी भी मिलीं जो अपना समय व्यतीत करने के लिये नौकरी करने की आवश्यकता को बताया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश स्त्रियाँ परिवार की आर्थिक स्थिति को ऊँचा करने के लिये कार्यरत हैं ये वे स्त्रियाँ है, जिनके पति की आय द्वारा उनके परिवार का खर्चा पूरा नहीं हो पाता है। इनमें से कुछ स्त्रियाँ विधवा तथा कुछ तलाकशुदा हैं। जिन मुस्लिम स्त्रियों के परिवार का आकार बड़ा है तो उनका व्यय अधिक होता हे। इस कारण उनके लिये कार्यशील होना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है।

9. कार्यशीलता पर प्रतिक्रिया

सामाजिक सम्मान, आर्थिक प्रतिफल, अच्छे कार्य के लिये प्रशंसा, व्यवसायिक सुरक्षा इत्यादि मुस्लिम स्त्री को व्यवसायिक संतुष्टि तथा आत्मनिर्भरता प्रदान करते हैं। समाज में परिवर्तन के साथ–साथ मुस्लिम स्त्रियों नें

अन्य धर्मों की स्त्रियों को रोजगार युक्त देखकर उनके मन में भी आत्मनिर्भर बनने की चाह बढ़ने लगी है। उनकी इस चाहत तथा आधुनिक मांग ने किस हद तक उन्हें संतुष्ट किया है। इन्हीं तथ्यों को प्रकाश में लाने के लिये शोधार्थी ने संकलित तथ्यों को निम्न सारणी में प्रस्तुत किया है।

सारणी संख्या (9) : कार्यशील होने पर प्रतिक्रिया का वर्गीकरण

कार्यशीलता पर प्रतिक्रिया	संख्या	प्रतिशत
मानसिक सन्तुष्टि	60	20
तनाव रहित	45	15
तनाव ग्रस्त	30	10
आत्मनिर्भर	159	53
उदासीन	06	02
कुल योग	300	100

उपरोक्त सारणी संख्या–9 के अवलोकन से स्पष्ट है कि 53 प्रतिशत उत्तरदाताओं नें कार्यशीलता पर आत्मनिर्भर होने की प्रतिक्रिया व्यक्त की है। 20 प्रतिशत नें मानसिक सन्तुष्टि, 15 प्रतिशत नें तनाव रहित, 10 प्रतिशत नें तनाव ग्रस्त तथा मात्र 02 प्रतिशत उत्तरदाता कार्यशीलता पर उदासीन पायी गई हैं। उन्होंने इस सम्बन्ध में अपनी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकतर मुस्लिम स्त्रियाँ अपनी कार्यशीलता सही मानती हैं। उनका कहना है कि इस आधुनिक दौर में प्रत्येक स्त्री को अपने पैरों में खड़ा होना चाहिए, क्योंकि न जाने जीवन में किस समय समस्याओं का अम्बार लग जाये। इसलिये स्त्री का रोजगारयुक्त होना बहुत आवश्यक है। यहाँ पर यह कहना उचित होगा कि मुस्लिम स्त्रियाँ तमाम सामाजिक व धार्मिक दबाव के पश्चात् भी आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहीं है।

10. परिवार में सहयोग की स्थिति

इरावती, कर्वे (1953) के अनुसार प्राचीन भारत में परिवार निवास सम्पत्ति और प्रकार्यों के आधार पर संयुक्त था। उन्होंने ऐसे परिवारों को परम्परागत या संयुक्त परिवार कहा है।

कपाड़िया (1966) का मत है कि हमारा पुरातन परिवार केवल संयुक्त था परिवार पितृसत्ता में ही नहीं था, बल्कि इसके साथ–साथ हमारे परिवार केन्द्रित भी होते हैं। संयुक्त परिवार में रहने वाली स्त्री को थोड़े बन्धन के साथ–साथ उन्हें पारिवारिक सदस्यों का सहयोग भी प्राप्त होता है। संयुक्त परिवार के सदस्य भिन्न–भिन्न रूपों में स्त्रियों की सहायता करते हैं। पारिवारिक सदस्यों द्वारा उत्तरदाताओं को मिलने वाले सहयोग की स्थिति का वर्गीकरण निम्न सारणीं में किया गया है।

सारणी संख्या (10) : उत्तरदाताओं का परिवार में सहयोग का स्तर

संयुक्त परिवार में सहयोग का स्तर	संख्या	प्रतिशत
गृहकार्यों में हांथ बँटाकर	66	22
बच्चों का ध्यान रखकर	36	12
परिवार का दैनिक कार्य करके	18	06
सभी प्रकार से सहयोग देकर	180	60
कुल योग	300	100

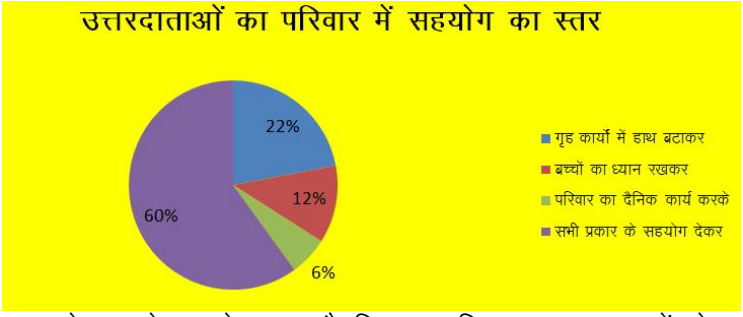

सारणी संख्या–10 के अवलोकन से स्पष्ट है कि 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्य सभी प्रकार से सहयोग प्रदान करते हैं। 22 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत है कि संयुक्त परिवार केवल ग्रह कार्यों में हाथ बटाकर सहयोग देते हैं। जबकि 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कथन है कि संयुक्त परिवार बच्चों का ध्यान रखकर सहयोग देते हैं तथा केवल 06 प्रतिशत उत्तरदाताओं नें कहा कि संयुक्त परिवार के दैनिक कार्य करके मुस्लिम स्त्रियों को सहयोग प्रदान करते हैं।

11. पुरुष की पारिवारिक कार्यों में सहभागिता

मुस्लिम स्त्रियों की विचारधारा आज के समय मे परिवर्तित हुई है। उनका विचार है कि यदि पति–पत्नी दोनों ही रोजगार युक्त हैं तो पति को कुछ घरेलू व बाहर के काम में हाथ बँटाना चाहिए। जबकि परम्परागत समाज में इस बात को कदापि अच्छा नहीं माना जाता था। परन्तु आज देखा जाता है कि पुरुषों के मूल्य भी परिवर्तित हुए हैं वे भी इन घरेलू कामों में हाथ बँटाने को अपना अपमान नहीं समझते। वे सभी कार्यों में भाग लेते हैं, लेकिन अधिकतर पुरुष आज भी इसको अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझते हैं। वहाँ स्त्रियों को ही समायोजन करना पड़ता है। शोधार्थी नें प्रस्तुत अध्ययन में मुस्लिम स्त्रियों से पुरुषो की परिवार के कार्यों में भाग लेने के विषय में राय जानने का प्रयास किया है और उन तथ्यों से प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में प्रस्तुत किया है –

सारणी संख्या (11) : पुरुषों का पारिवारिक कार्यों में सहयोग की स्थिति

सहयोग का स्तर	संख्या	प्रतिशत
अच्छा	150	50
बहुत अच्छा	75	25
बुरा	30	10
सामान्य	45	15
कुल योग	300	100

उपरोक्त सारणी संख्या–11 से स्पष्ट है कि 50 प्रतिशत मुस्लिम स्त्रियों का विचार है कि उन्हें पुरुषों का ग्रह कार्यों में सहयोग करना अच्छा लगता है जबकि 25 प्रतिशत उत्तरदाता इसको बहुत अच्छा मानती हैं। 15 प्रतिशत उत्तरदाता इसे सामान्य तथा 10 प्रतिशत मुस्लिम स्त्री उत्तरदाता इसको बुरा मानती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकतर मुस्लिम स्त्रियाँ अपनी कार्यशीलता सही मानती हैं। उनका कहना है कि इस आधुनिक दौर में प्रत्येक स्त्री को अपने पैरों में खड़ा होना चाहिए, क्योंकि न जाने जीवन में किस समय समस्याओं का अम्बार लग जाये। इसलिये स्त्री का रोजगारयुक्त होना बहुत आवश्यक है। यहाँ पर यह कहना उचित होगा कि मुस्लिम स्त्रियाँ तमाम सामाजिक व धार्मिक दबाव के पश्चात् भी आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहीं है। अधिकतर रोजगार युक्त मुस्लिम स्त्रियाँ यह चाहती हैं कि पुरुषों को भी स्त्रियों के साथ परिवार के विभिन्न कार्यों में सहयोग देना चाहिए। क्योंकि उनके इस सहयोग के द्वारा स्त्री

अपने कार्य तथा अपने परिवार के बीच सुव्यवस्थित ढंग से समायोजन कर सके और इस समायोजन के द्वारा समाज में उनकी प्रतिष्ठा बनी रहे।

सन्दर्भ सूची

1. Karl, Manheim. 1954. *Ideology and Utopia : an Introduction to the sociology of knowledge,* Newyourk : Rautlag & Kegan Paul .
2. रिजले, एच0एच0. 1908. *द पीपुल ऑफ इण्डिया,* लंदन : डब्लू थैकर एण्ड कम्पनी।
3. कपूर, प्रमिला.1970. *द चेंजिंग स्टेटस ऑफ द वर्किंग वुमैन इन इण्डिया,* नई दिल्ली : विकास पब्लिकेशन हाउस।
4. तलवार, ऊषा.1984. *सोशियल प्रोफ़ाइल ऑफ वर्किंग वूमैन,* जोधपुरःजैन ब्रदर्स।
5. हॉट, सी0ए0.1948. *द सोशियो इकोनॉमिक्स कन्डीशन ऑफ एज्यूकेशन वूमैन इन बाम्बे सिटी,* बम्बई : यूनिवर्सिटी ऑफ मुम्बई।
6. देसाई, जी0बी0.1945. *वुमैन इन मार्डन गुजराती लाईफ,* मुम्बई विश्वविद्यालय : अप्रकाशित मास्टर्स थीसिस।
7. सिल्लेरॉट, ई0. 1971. *वुमैन सोसाइटी एण्ड चेन्ज,* लंदन, वर्ल्ड यूनीवर्सिटी लाईब्रेरी।
8. राजवंशी, बालक राम. 2017. *मुस्लिम स्त्रियों में शिक्षा एवं सामाजिक गतिशीलता,* United States : Lulu Publications.

LBP PUBLICATION